प्रस्तुतकर्ता

संजय भारती

असिस्टेंट प्रोफेसर – समाजशास्त्र

राजकीय महाविद्यालय जक्खिनी वाराणसी

विषय- समाजशास्त्र

नई शिक्षा नीति - 2020

बी.ए. - प्रथम सेमेस्टर(माइनर एंड मेजर)

इकाई –चतुर्थ

पुस्तक - समाजशास्त्र के मूल तत्व एवं अवधारणाएं

उपशीर्षक- धर्म की उत्पत्ति के सिद्धांत

स्वघोषणा

(disclaimer/ self-Declaration)

यह सामग्री विशेष रुप से शिक्षण और सीखने को बढ़ाने के शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए है।आर्थिक /वाणिज्यिक अथवा किसी अन्य उद्देश्य के लिए इसका उपयोग पूर्णता प्रतिबंधित है। सामग्री के उपयोगार्थ इसे किसी और के साथ वितरित, प्रसारित या साझा नहीं करेंगे और इसका प्रयोग व्यक्तिगत ज्ञान की उन्नति के लिए ही करेंगे। इस कंटेंट में जो जानकारी दी गई है वह प्रमाणित है और मेरे ज्ञान के अनुसार सर्वोत्तम है।

" The content is exclusively meant for academic purpose and for enhancing teaching and learning. Any other used for economic / commercial purpose is strictly prohibited the users of the content shall not distribute, disseminate or share it with anyone else and its use is restricted and advancement of individual knowledge. The information provided in this e-content is authentic and best as per my knowledge."

धर्म की उत्पत्ति के सिद्धांत

मानव समाज में धर्म की उत्पत्ति कैसे हुई इसके संबंध में निश्चित व्याख्या अभी तक नहीं की गई है। आदिवासी समाज में धर्म संगठित नहीं था उनमें न तो धर्मस्थल होता था न तो धार्मिक व्यवहार की निश्चित शैली होती थी। इसलिए उनके धर्म को पगार धर्म या प्राचीन धर्म कहा जाता है। किसान समाजों में धर्म विकसित हुए एवं अत्यधिक संगठित हुए जिससे विश्व के महान धर्मों की उत्पत्ति एवं विकास हुआ। धर्म की उत्पत्ति के संबंध में विभिन्न विद्वानों ने अपने अपने सिद्धांत से स्पष्ट किया है।

1.आत्मावाद या जीववाद (Animism) - टाइलर

2.जीवित-सत्तावाद या मानववाद(Animatism of Manaism) - मैक्स मूलर एवं प्रीउस तथा कार्डरिंगटन एवं मैरेट

3. प्रकृतिवाद(Naturalism) - मैक्स मूलर

4. धर्म का सामाजिक सिद्धांत या टोटमवाद - दुर्खीम

आत्मावाद या जीववाद

आदिम धर्म की उत्पत्ति के संबंध में सर्वप्रथम इंग्लैंड के मानवशास्त्री तथा मानवशास्त्र के जनक टाइलर ने कहा आदि मानव समस्याओं और संघ सहयोग से घिरा था इसका हल खोजने के लिए उसने कल्पना का सहारा लिया की समाज और संसार को पूर्वजों की आत्मा चलाती है आत्मा शक्तिशाली है यह मरती नहीं है। मृत्यु के बाद भी यह आस पास घूमती रहती है व्यक्तियों के जीवन को यह नियंत्रित करती है। यह कहा गया कि आत्मा के दो स्वरूप और आयाम है- एक शरीर आत्मा जो अस्थाई है जिसमें रक्त और मस्तक होता है इसके नहीं रहने पर व्यक्ति जीवित नहीं रहेगा। दूसरा मुक्त आत्मा परछाई है सामान्य अंग स्वप्न में शरीर से निकलकर मृत आत्माओं से मिलती है और

उससे अभिशाप और आशीर्वाद प्राप्त करती है इससे ही अथवा मृत आत्माओं की पूजा से ही धर्म का आरंभ हुआ।

भारत में कुछ जनजातियां अंतेष्ठी की क्रियाएं करती है जिसमें एक हरी और दूसरी सुखी जो एक अनिश्चितता का सूचक है संभवत आत्मा पुनः लौट आए यह क्रिया मृत्यु के तुरंत बाद की जाती है और उस सूखी दाह क्रिया कुछ समय बाद जब की आत्मा के पुनः लौट आने की कोई संभावना नहीं रहती।

टाइलर के सिद्धांत की विभिन्न विद्वानों ने आलोचना किया कि टाइलर ने आदि मानव को तर्कशील एवं दार्शनिक रूप में प्रस्तुत किया है तथा आत्मा की धारणा के अतिरिक्त अन्य धारणाएं भी पाई जाती थी। टाइलर ने बहुत ही सरल रूप में अपने सिद्धांत को प्रस्तुत किया जबकि धर्म एक जटिल संस्था है। धर्म की उत्पत्ति एक सामाजिक तथ्य है केवल आत्मा के आधार पर ही धर्म को हम स्पष्ट नहीं कर सकते हैं।

जीवित- सत्तावाद या मानववाद

मैक्स मूलर एवं प्रीउस तथा कार्डरिंगटन एवं मैरेट ने कहा कि आदि मानव ने बड़ी-बड़ी वस्तुओं में देवी शक्ति की कल्पना किया और उनकी पूजा करने लगे इससे ही धर्म का आरंभ हुआ। मैरेट जो इंग्लैंड के रहने वाले थे एवं ऑस्ट्रेलिया में आदिवासियों का अध्ययन कर रहे थे उन्होंने कहा आस्ट्रेलिया के आदिवासी बड़ी-बड़ी वस्तुओं को माना कहते हैं जैसे - बड़े वृक्ष, बड़े झरना उसकी पूजा करते हैं। संभवत ऐसे ही पूजा से धर्म का आरंभ हुआ। डी. एन. मजूमदार ने छोटा नागपुर झारखंड के आदिवासी विचित्र एवं क्षमतावान वस्तुओं को बोंगा अथवा ईश्वर कहते हैं संभवत ऐसे ही बोंगा की पूजा से धर्म का उदय हुआ। मजूमदार ने कहा इस क्षेत्र के आदिवासी साइकिल बोंगा, हवाई जहाज बोंगा, धर्म की उत्पत्ति के संबंध में मैरेट ने मानावाद का सिद्धांत दिया एवं मजूमदार ने बोंगाबाद का सिद्धांत दिया।

धर्म एक सामाजिक तथ्य है इसे हम बोंगाबाद या मानावाद के आधार पर स्पष्ट नहीं कर सकते हैं नहीं इन विद्वानों ने इसे स्पष्ट करने का प्रयास किया ।

प्रकृतिवाद

इस सिद्धांत को मैक्स मूलर जैसे जर्मन विद्वान ने दिया मैक्स मूलर ने कहा आदि मानव का दिमाग कमजोर था। वह बीमार मस्तिष्क का शिकार था इसलिए प्रकृति की शक्तियों और वस्तुओं को उसने जीवित मान लिया और उसे शक्तिशाली मानने लगा उसी से धर्म की उत्पत्ति हुई। इसीलिए वह कहता है कि नदी बहती है। सूरज उगता है अर्थात प्रकृति की पूजा से धर्म का आरंभ हुआ। कार्ल मार्क्स ने कहा धर्म की उत्पत्ति आदिमानव के द्वारा प्रकृति के भयंकर स्वरूपों की पूजा से हुई पश्चिम एशिया के सभी धर्म यहूदी, ईसाई, इस्लाम में भी प्रकृति को देवी कहा जाता है। मेक्सिको की माया संस्कृति में, अर्जेंटीना की संस्कृति में प्रकृति को देव तुल्य माना जाता है। मजूमदार ने कहा कि आदि मानव प्रकृति से इतना जुड़ा है कि वह प्रकृति को देवी मानता है। इसलिए उसने प्रकृति, मानव और ईश्वर की त्रिआयामी धारणा दिया।

धर्म की उत्पत्ति का यह सिद्धांत भी यह सिद्ध करने में असफल रहे कि प्रकृति जीवित सजीव है। केवल कल्पना और अनुमान के आधार पर मैक्स मूलर ने इसे सिद्ध करने का प्रयास किया। जबकि धर्म एक सामाजिक तथ्य है।

धर्म का सामाजिक सिद्धांत या टोटमवाद

दुर्खीम ने धर्म का सामाजिक सिद्धांत प्रस्तुत किया। दुखीम ने कहा एकता की आवश्यकता से धर्म का आरंभ हुआ उन्होंने उत्तर पश्चिम में रहने वाली अरुण्टा जनजाति के आदिम अस्तित्व को देखते हुए यह तर्क दिया कि उनका ही धर्म मानव समाज का सबसे पुराना धर्म होगा क्योंकि अरुण्टा जनजाति टोटम की पूजा करती है और टोटम कुल का प्रतीक होता है। टोटम वास्तव में कुल के महत्व को प्रदर्शित करता है। दुर्खीम ने कहा टोटमवाद अथवा टोटम ही पूजा का आरंभिक स्वरूप रहा होगा। जिससे कि धर्म की उत्पत्ति हुई होगी।

आदिवासियों में मृत आत्माओं की पूजा, प्रकृति की पूजा, टोटम की पूजा, विचित्र वस्तुओं की पूजा सभी प्रचलित है फिर भी यह कैसे कहा जा सकता है कि केवल टोटम की

पूजा से ही धर्म का आरंभ हुआ होगा और यह सिद्ध करना भी मुश्किल है कि अरुण्टा जनजाति सबसे आदिम है।

संदर्भ ग्रंथ-

1. अग्रवाल, डॉ. जी. के., नवीन संस्करण, 2017 ,समाजशास्त्र, बी़. ए. तृतीय वर्ष, यस. बी. पी.डी. पब्लिकेशन हाउस,आगरा।

2.अग्रवाल, डॉ. जी. के., नवीन संस्करण, 2017 ,समाजशास्त्र, बी़. ए. द्वितीय वर्ष, यस. बी. पी.डी. पब्लिकेशन हाउस,आगरा।

3.. रावत, हरीकृष्ण, 2005, समाजशास्त्री चिंतक एवं सिद्धांतकार, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

4..रावत, हरीकृष्ण, 2015, उच्चतर समाजशास्त्रीय विश्वकोश , रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

5. शर्मा, एम. एल. एवं शर्मा डी. डी, 2002, समाजशास्त्र, साहित्य भवन पब्लिकेश,आगरा

6.. शर्मा, एम. एल. एवं शर्मा डी. डी, 2005, सामाजिक मानवशास्त्र, साहित्य भवन पब्लिकेश,आगरा